

**गिलट** पुं. (अं.) 1. मुलम्मा 2. सोने का पानी चढ़ाने का काम 3. चाँदी के रंग की घटिया धातु।

**गिलटी** स्त्री. (तद्.) 1. शरीर के संधिस्थान की गाँठ 2. एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर के विभिन्न अंगों में गाँठें निकलती हैं।

**गिलन** पुं. (तत्.) निगलने की क्रिया या भाव।

**गिलना** स.क्रि. (तद्.) 1. निगलना 2. मन में रखना, प्रकट न होने देना।

**गिलबिला** वि. (अनु.) 1. बहुत कोमल 2. पिलपिला 3. अस्पष्ट उच्चारण करने वाला।

**गिल बिलाना** अ.क्रि. (अनु.) 1. अस्पष्ट वचन बोलने वाला 2. व्याकुल होकर बोलना।

**गिलम** स्त्री. (फा.) 1. ऊनी कालीन 2. मोटा गद्दा।

**गिलमिल** पुं. (फा.) एक तरह का बढ़िया कपड़ा।

**गिलहरी** स्त्री. (फा.) पेड़ों पर रहने वाला चूहे जैसा छोटा जंतु।

**गिला** पुं. (फा.) 1. उलाहना 2. शिकायत, निंदा।

**गिलाजत** स्त्री. (अर.) 1. गाढ़ापन 2. गंदगी, अपवित्रता, नापाकी।

**गिलाफ** पुं. (अर.) 1. तकिये की खोली 2. लिहाफ 3. म्यान।

**गिलावा** पुं. (देश.) गारा, मिट्टी और पानी का बना हुआ वह गाढ़ा घोल जिससे राज मजदूर दिवारों की चुनाई करते हैं।

**गिलास** पुं. (अं.) 1. शीशे या धातु का बना पानी पीने का लंबा गोल पात्र 2. ओलची नामक पेड़ जिसके फल मुलायम और स्वादिष्ट होते हैं।

**गिलित** वि. (तत्.) निगला हुआ, भक्षित।

**गिलोय** स्त्री. (फा.) गुड़ची, एक प्रकार की कड़वी बेल जिसके पत्ते दवा के काम आते हैं।

**गिलोल** स्त्री. (फा.) दे. गुलेल।

**गिलोला** पुं. (फा.) गुलेल से फेंकी जाने वाली मिट्टी की गोली।

**गिलौरी** स्त्री. (देश.) घन या तिकौना या चौकोना बीड़ा।

**गिल्ली** स्त्री. (देश.) दे. गुल्ली मुहा. गिल्लियाँ गढ़ना- व्यर्थ बकवाद करना।

**गीजना** स.क्रि. (देश.) 1. नरम नाजुक चीज को मसल कर खराब करना 2. खाने के पदार्थ को हाथ से एक दूसरे से मिलाना।

**गीत** पुं. (तत्.) 1. गाने की चीज, गाना 2. एक तरह की तान 3. स्वरों का उतार-चढ़ाव मुहा. गीत गाना- बड़ाई करना, प्रशंसा करना; अपना ही गीत गाना- अपनी ही बात कहना 4. बड़ाई, यश वि. 1. गाया हुआ 2. घोषित, कथित।

**गीतक** वि. (तत्.) 1. गीत गाने वाला 2. गीत बनाने वाला पुं 1. गीत, गाना 2. प्रशंसा, बड़ाई।

**गीतकार** पुं. (तत्.) गीत लिखने वाला।

**गीतगोविंद** पुं. (तत्.) जयदेव कृत संस्कृत का प्रसिद्ध गीति काव्य।

**गीतप्रिय** पुं. (तत्.) 1. शिव 2. श्री कृष्ण 3. गीतों का प्रेमी।

**गीतमोदी** पुं. (तत्.) किन्नर।

**गीतशास्त्र** पुं. (तत्.) संगीत विद्या।

**गीता** स्त्री. (तत्.) 1. ज्ञानमय उपदेश 2. भगवद्गीता 3. संकीर्ण राग का एक भेद 4. मात्रा का एक छंद जिसमें 14 और 12 मात्राओं पर विराम होता है 5. वृत्तान्त, कथा, हाल।

**गीतायन** पुं. (तत्.) गायन के साधन, मृदंग, वीणा, बाँसुरी आदि।

**गीति** स्त्री. (तत्.) 1. गान, गीत 2. एक मात्रिक छंद जिसके विषम चरणों में 12 और सम चरणों में 18 मात्राएँ होती हैं 3. गीत-गायन की एक पद्धति।

**गीतिका** पुं. (तत्.) 1. एक छोटा गीत 2. एक मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में 23 मात्राएँ होती हैं 3. एक वर्ण वृत्त।